सदानीरा

विश्व कविता और अन्य कलाओं की पत्रिका

वसंत 2018

यादें

अंक-18 । वर्ष-6

जनवरी-फरवरी 2018

ISSN 2321-1474

प्रधान संपादक

आग्नेय

संपादक

अविनाश मिश्र

मुखावरण, पृष्ठावरण और भीतरी तस्वीरें : शिव कुमार गांधी

विदेशी कवियों-लेखकों की तस्वीरें गूगल से

sadaneera.com /Sadaneera

प्रधान कार्यालय :

बी-207, चिनार वुडलैंड,
कोलार रोड, भोपाल-4622016
मध्य प्रदेश
फोन : 0755-2424126, 9303139295
agneya@sadaneera.com

संपादकीय संपर्क :

171, गिरधर एंक्लेव,
साहिबाबाद, गाजियाबाद-201005
उत्तर प्रदेश
मो. : 9818791434
editor@sadaneera.com

रचनाएं भेजने के लिए :

submit@sadaneera.com

एक अंक के लिए : ₹ 100 । $ 5
संस्थाओं के लिए : ₹ 700

वार्षिक सदस्यता : ₹ 500
आजीवन सदस्यता : ₹ 10,000

'सदानीरा' डाक से मंगाने के लिए सदानीरा के नाम संपादकीय पते पर चेक/ड्राफ्ट भेजें या देना बैंक (अरेरा कॉलोनी, भोपाल, IFSC : BKDN0811184) के करंट अकाउंट नंबर : 118411023949 में राशि जमा करके हमें ईमेल या फोन पर सूचित कर दें.
© सर्वाधिकार सुरक्षित. इस पत्रिका का कोई भी हिस्सा किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम, जिसमें सूचना संग्रहण और सूचना संसाधन की विधियां सम्मिलित हैं, द्वारा प्रकाशक अथवा संपादकों की पूर्वानुमति के बिना पुनरुत्पादित नहीं किया जा सकता सिवाय एक समीक्षक के जो समीक्षा में संक्षिप्त अंशों को उद्धृत कर सकता है. प्रकाशित कृतियों का कॉपीराइट लेखकों / अनुवादकों / कलाकारों का है. भेजी गई रचनाओं पर अगर सात दिन के भीतर कोई उत्तर नहीं मिलता, तब रचनाकार उसे अन्यत्र भेजने के लिए स्वतंत्र है. मुफ्त अंक और नमूना प्रति भेजने की सुविधा नहीं है, कृपया इस संदर्भ में कोई फोन, ई-मेल या पत्र-व्यवहार न करें. 'सदानीरा' की सदस्यताएं केवल प्रिंट इश्यू के लिए हैं. प्रिंट में अनुपलब्ध कुछ अंक डिजिटल फॉर्म में sadaneera.com की **पूर्व अंक** श्रेणी में हैं और वहां नि:शुल्क पढ़े और सहेजे जा सकते हैं.

माया दुबे अग्निमा स्मृति संस्थान के लिए प्रकाशित

क्रम

वसंत 2018

यादें

शुरुआत *6*
आग्नेय

बातें *9*
रॉबर्तो बोलान्यो से कार्मेन बोयोषा
अनुवाद : संध्या कुलकर्णी

स्वीडिश कविता *18*
आन येदरलुंड
अनुवाद और प्रस्तुति : गार्गी मिश्र

पाठ *24*
आर्मान्दो ओरोज़को तोवार
अनुवाद : पल्लवी प्रसाद

स्पैनिश कविता *28*
हावियर हिरॉद
अनुवाद : आग्नेय
आलेहांद्रा पिजारनीक
अनुवाद : रीनू तलवाड़

फ्रेंच कविता *38*
रने शार
अनुवाद : रीनू तलवाड़

एस्टोनियन कविता *41*
यान कप्लिंस्की
अनुवाद : रीनू तलवाड़

स्पैनिश गद्य *45*
एनरिके विला-मतास
अनुवाद और प्रस्तुति : आदित्य शुक्ल

49 **पोलिश कविता**
यानुष षुबेर
अनुवाद और प्रस्तुति : उदय शंकर

56 **चिट्ठियां**
स्तानिस्लावस्की के नाम वाख्तानगोव
अनुवाद : पी. एस. मलतियार
प्रस्तुति : महेश वर्मा

61 **फारसी कविता**
कुर्रतुल-ऐन-ताहिरा
अनुवाद और प्रस्तुति : सदफ नाज

63 **मराठी कविता**
अरुण कोलटकर
अनुवाद और प्रस्तुति : प्रतिभा

75 **वृत्तांत**
प्रचण्ड प्रवीर

121 **हिंदी कविता**
शुभम श्री

131 **हिंदी गद्य**
सोमप्रभ

141 **सुर**
प्रवीण झा

145 **तस्वीरें**
शिव कुमार गांधी

152 **उत्प्रेक्षा**
बेजी जैसन

160 **सौ शब्द**
अविनाश मिश्र

सत्य के सम्मुख सत्ता से विमुख

आग्नेय

दिल से बातें करना आसान होता है, लेकिन दिल से अपनी बात कहने के कुछ खतरे भी हैं. जैसे विषय से बहक जाने का खतरा, रास्ते से भटक जाने का खतरा. इसके पहले कि मैं भटक जाऊं या बहक जाऊं, अपने को पाब्लो नेरुदा की एक कविता से सावधान कर लेना चाहता हूं. 'सत्य' पर लिखी उनकी कविता के अंश हैं :

''मैं आदर्शवाद और यथार्थवाद
दोनों के प्रति समर्पित हूं
तुम पत्थर और पानी की तरह
इस दुनिया के हिस्से हो
जिंदगी के उजाले हो
उसकी धंसी जड़ें हों
मेरे मर जाने के बाद भी
मेरी आंखें बंद नहीं करना
सीखने के लिए देखने के लिए
अपने अवसान को समझने के लिए
मुझे उनकी जरूरत होगी...''

इस तरह कवि कविता के माध्यम से अमर हो जाने की परिकल्पना करने लगता है. उसकी यही लालसा और जिंदगी से लगातार सवाल पूछते रहने की आदत दिल में न जाने कितने ज्वालामुखियों को धधका देती है. उनके पिघलते लावे में मुझे तैरना सीखना होगा. न जाने कितने कवियों और शाइरों ने आग के दरियाओं को डूबकर-तैरकर पार किया है. ये सारे के सारे ज्वालामुखी हमारी दुनिया में अब तक दबे-धंसे हुए थे. अब एक साथ सारी दुनिया में फूट पड़े हैं. इनका वजूद हमसे लगातार सवाल पूछ रहा है. इन ज्वालामुखियों के कुछ सवाल हैं : क्या हम ऐसा समाज बना रहे या बना चुके हैं, जिसमें अच्छाई की कोई ताकत नहीं है? ऐसे समाज में वे ही ताकतवर हैं, जो बुरा कर सकते हैं, किसी को नुकसान पहुंचा सकते हैं, पीठ के पीछे वार कर सकते हैं, आपको कुचलते हुए आगे बढ़ सकते हैं. लालच इनकी प्रेरक शक्ति है. ऐसे समाज में लोग सत्ता का उपयोग नहीं उसका दुरुपयोग करते हैं, उससे डरते हैं. उसकी दासता में गौरवान्वित अनुभव करते हैं. क्या हम एक ऐसी बंद गली में पहुंच चुके हैं, जहां से बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं है? कुछ और सवाल भी हैं. क्या मनुष्य की यात्रा का अंत होने वाला है? उसकी अब तक की यात्रा पशु से मनुष्य होने की रही है, क्या हम अब एक अंधी यात्रा पर जा रहे हैं? क्या यह पीछे लौटने की यात्रा है, मनुष्य से पुनः पशु हो जाने की यात्रा? क्या मनुष्य के पास अपना इतिहास रचने के लिए कुछ शेष नहीं रहा? क्या इन यक्ष-प्रश्नों का कोई उत्तर है हमारे पास? 'है' और 'नहीं है' की तलवार की धार पर चलते हुए हम ठिठक गए हैं.

इन तमाम सवालों से घिरा मैं सोचता हूं कि कवि आज एकांत में कवि है और अपने जीवन-संग्राम में एक साधारण नागरिक. इस सच्चाई के नाते उसके लिए एक नागरिक कवि की तरह रहना ज्यादा सार्थक और श्रेयस्कर है. लेकिन मैं पाता हूं कि सत्ता के सम्मोहन से संक्रमित मेरे समाज में उस नागरिक के लिए कोई स्पेस नहीं बचा है, जो सड़क की बाईं ओर चलता है. लालबत्ती होने पर अपना वाहन रोकता है. अपने घर के सामने कचरा नहीं फेंकता. इधर-उधर थूकता भी नहीं. नियमित रूप से टैक्स देता है. अपना काम सेवा-भाव और ईमानदारी से करता है. रिश्वत नहीं लेता. चुनावों के समय मतदान करता है. पड़ोसी से दोस्ती रखता है. अपनी पत्नी का सम्मान करता है. अपने बच्चों से प्यार करता है और अपने माता-पिता की भरसक देखभाल करता है और देश के लिए अपनी जान भी दे सकता है. जिस तरह साधारण नागरिक के लिए कोई स्पेस नहीं है, उसी तरह यहां एक कवि के लिए भी कोई स्पेस नहीं बचा, क्योंकि वह जानता है कि अच्छा और ताकतवर आदमी अलग-अलग तरह के दो आदमी हैं. वह मानता है कि अच्छा और ताकतवर एक नहीं हो सकते. अच्छा आदमी ताकतवर नहीं है और ताकतवर अच्छा आदमी नहीं है. अच्छाई और ताकत में छत्तीस का आंकड़ा है. एक का न होना दूसरे का होना है. सत्य के सम्मुख अच्छाई ही टिकी रह सकती है. ताकतवर में इतना ताब नहीं होता कि वह सत्य से आंखें मिला सके. ताकतवर तभी